# प्राक्कथन

## रसातल

यह भूजल की कहानी है: अमृत का विष में परिवर्तित होने की कहानी। जिसमें हैंडपम्प से निकले हुए पानी को पीने की आम दिनचर्या भी एक जानलेवा बीमारी का स्रोत बन जाता है। यह एक ''प्राकृतिक'' दुर्घटना नहीं है — जहाँ भूगर्भ में उपस्थित प्राकृतिक संखिया (संखिया ) और फ्लुराईड पीने के पानी में अपने आप आ गया हो। यह कहानी है जान-बूझकर किए गए विषाक्तीकरण का। जिसे रूप दिया है सरकार और बहुपक्षिय अभिकरणों ने। इनका मकसद था स्वच्छ पानी का संभरण, और इन्होंने इसके लिए जमीन के अन्दर परिवेघन करना शुरू किया। नतीजा: भूगर्भ का रसातल आम दिनचर्या की जिन्दगी में आ समाया।

इन बीमारियों के कारण जो भी हों, यह निश्चित है कि वे भूगर्भ के पानी से जुड़े हुए हैं। संखिया-पीड़ित इलाकों में किए गए शोध से पता चलता है कि संखिया की सांद्रता जमीन में गहराई के साथ-साथ बढ़ता है — यह सांद्रता 100-125 फीट में सबसे ज्यादा हो जाता है। जैसे-जैसे गहराई 400 फीट तक जाती है, सांद्रता भी कम होता जाता है।

यह कहानी कई साल पहले शुरू होती है। 1960 और 1970 के दशकों में, जब सरकार और बहुदेशीय अभिकरणों ने सभी को स्वच्छ पानी उपलब्ध कराने के लिए योजनाओं की शुरूआत की। उन्होंने समझा — और सही समझा — कि पानी में उपस्थित जीवाणु ही विश्वभर में बच्चों की मौत का सबसे बड़ा कारण है। उन्होंने यह माना कि सतही पानी — जो कि सैकड़ों तालाबों, नदियों और अन्य पानी संकलन के साधनों में मौजूद है — दूषित हो चुका है। इसलिए उन्होंने जमीन में परिवेधन के नए तकनीकों में पूँजी लगाना शुरू किया। ड्रिल, बोरपाईप, ट्यूबवैल और हैंडपम्प जन-स्वास्थ्य मिशन के लिए महत्वपूर्ण उपकरण हो गए। पानी का तल गिरने लगा। और भी गहरे गढ्ढे खोदे गए। और यहाँ पर कहानी में एक मोड़ आया।

स्वच्छ पानी की तलाश का सरकार का इरादा तो नेक था, मगर एक मायने में उसकी प्रतिक्रिया बड़ी ही कठोर और आपराधिक रही। खबर आ रही थी कि शायद ये ''अनोखी'' बीमारियों का वजह पीने का पानी ही था — मगर सरकार इन खबरों को नकारती रही। वह लोगों को गलत जानकारी देती रही, और उन्हें उलझन में डालती रही। अपने निष्क्रियता के लिए उसने विज्ञान का इस्तेमाल किया। कहानी के इस उपकथानक में सरकार की असर्मथता के कई उदाहरण मौजूद हैं — जहाँ उसने समस्या को समझने, उसके कारण निश्चित करने और उसका निदान ढूँढने में लापरवाही की। इस उपकथानक का ही अंत होता है भयावह और जानलेवा बीमारियों से।

यह कहानी है पीड़ितों की — जो इस इलाके के बिखरे हुए गांवों के निवासी हैं। ये सब सरकारी तौर पर पीड़ित माने जाते हैं, और इनके ट्यूबवैलों को लाल रंग से चिह्नित किया गया है। लेकिन इसके अलावा ''गैर-सरकारी'' और अन्जान पीड़ित भी हैं। शायद हजारों की संख्या हो उनकी। किसी को पता नहीं क्योंकि किसी ने भी पता करने की कोशिश नहीं की है। इन पीड़ितों को खुद नहीं पता। उन्हें सिर्फ यह पता है कि वे बीमार हैं। मगर क्या उनकी रहस्यमयी बीमारी का कारण पानी है? पता लगाने के लिए वे जाएं तो कहाँ जाएं?

अक्टूबर 2004 में *डाउन टु अर्थ* का सामना हुआ इन्हीं में से कुछ ''गैर-सरकारी'' पीड़ितों से। और एक भयावह सच पर से पर्दा हट गया। जब दिल्ली-स्थित ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मैडिकल साइंसेज से नीना खन्ना ने हमें फोन किया और कहा कि बलिया (उत्तर प्रदेश) से आए उनके मरीज के खून, बाल और नाखून में भारी मात्रा में संखिया का पता चला है, तो हम भी चौंक गए। बलिया कैसे? हमने पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में संखिया के बारे में सुना था — उत्तर प्रदेश में नहीं। इसकी क्या वजह हो सकती थी?

हमें जो जानकारी मिली, उसने हमें भयभीत भी किया और क्रोधित भी। इसलिए नहीं कि हमने पाया कि इस अत्यंत गरीब इलाके के लोग सच में संखिया-दूषित भूजल पी रहे थे। इसलिए नहीं की हमने गरीबों को अपंग और कैंसर से मरते पाया। इसलिए भी नहीं कि हमने सुना इन गाँवों की लड़कियों की शादी तब तक नहीं होती जब तक गांववाले होनेवाले दुल्हों के सामने परेड नहीं करते — यह साबित करने के लिए कि लड़की के शरीर पर धब्बे सिर्फ उसके शरीर पर नहीं, बल्कि गाँव के अधिकतर लोगों के शरीरों पर हैं।

हम जिला प्रशासन के उदासीन और निर्दयी रवैये से स्तब्ध रह गए। प्रशासन ने इस समस्या को अनदेखा कर दिया। यह कुछ भी नहीं है, उन्होंने कहा। हमें धक्का और भी लगा यह जानकर कि सरकार ने भूजल, का जो जाँच कराया, उसमें संखिया नहीं मिला। प्रशासन ने पानी के नमूने इंडस्ट्रीयल टाक्सिकालॉजी रिसर्च सेंटर भेजे थे; इन नमूनों में संखिया का न होना रहस्यमय है, जबकि गांववाले प्रकट रूप से दु:ख झेलते दिख रहे थे। अगर संखिया नहीं था, तो क्या था? कोई जवाब नहीं मिला। जरा इस दृश्य की कल्पना कीजिए। गाँववालों ने पूछा, क्या उनके कुँओं में संखिया है। नहीं — उन्हें आश्वासन दिया गया। वे उसी पानी को पीते रहे — उसी विष का सेवन करते रहे, हर रोज। इससे बुरा क्या हो सकता है?

मगर हमने इस विज्ञान-के-पिछे-छुपने के खेल को कई बार खेला है। हम इस खेल के नियमों को अच्छी तरह समझते हैं। हमने तय किया कि भूजल, बाल और नाखून के नमूने इकट्ठा करेंगे (संखिया इन्हीं में जमा होता है) और उनकी जाँच करेंगें।

पानी के जो नमूने हमने जांच किए, उनमें ऊंची मात्रा में संखिया मौजूद था, जो कि अनुमत मात्रा से काफी ज्यादा था। जो बाल के नमूने हमने जांच करवाए, उनमें संखिया की मात्रा 4,700 से लेकर 6,300 पार्टस प्रति बिलियन (पीपीबी) था। हम इसकी सटीक रूप से तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि विश्व में ऐसी कोई भी संस्था नहीं है जिसने 'सामान्य' तल के लिए मानकों का निर्धारण किया हो। सभी यह मानकर चलते हैं कि संखिया नहीं होना चाहिए। कुछ वैज्ञानिक शोध 250 पीपीबी तक को सहनीय मानते हैं। यह जाहिर है कि हमने जो पाया, वह 'स्वीकार्य' नहीं था।

केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय का मानना है कि सिर्फ पश्चिम बंगाल के आठ जिले और बिहार का एक जिला ही संखिया की चपेट में है। मंत्रालय की यह भी धारणा है कि वह इस समस्या का समाधान जल्दी ही कर लेगी। मगर असल में, मंत्रालय ने इस समस्या पर पर्दा डाल दिया है। सच बात तो यह है कि अब संखिया बिहार के अन्य जिलों, तेरई उत्तर प्रदेश और आसाम में भी फैल चुका है। यह एक विश्वमारी का रूप ले चुका है।

इन इलाकों में संखिया क्यों है? संखिया भूजल में क्यों है? जो वैज्ञानिक संखिया पर शोध कर रहे हैं, इस विषय पर उनके मतों में कोई मेल नहीं है। वे सिर्फ इतना मानते हैं कि संखिया प्राकृतिक रूप से मौजूद है, और इस इलाके में पाया जाता है क्योंकि वह हज़ारों साल पहले नदियों की गाद के जरिए यहां आया है। नदियां जब धीमी होती गई और टेढ़ी-मेढ़ी बहने लगीं, तो उन्होंने अपनी तटों पर गाद का निक्षेप किया। इसलिए संखिया पश्चिम बंगाल और बंग्लादेश के डेल्टा-क्षेत्रों में पाया जाता है। लेकिन भूजल में संखिया कैसे आ जाता है, इस पर अभी भी सिर्फ कुछ सिद्धान्त ही हैं। बहरहाल, नीति निर्वाचन के लिए इतना जानना ही काफी है कि किसी कारण-वश संखिया इंडो-गैन्जेटिक मैदान में मौजूद है। यह एक भयानक समस्या है? यह एक विशाल मानवीय समस्या भी है। और हमें इसका एक हल ढूंढना ही पड़ेगा। मैं यह कहूंगी कि पानी में संखिया की समस्या — फ्लुराईड की समस्या की तरह — पानी के प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। बल्कि, यह पानी के कुप्रबंधन से जुड़ा हुआ है। दोनों भूजल में पाए जाते हैं। मगर दोनों अब हमारे पीने के पानी में मौजूद हैं क्योंकि हमने अपनी सतही जल संपदाओं को या तो प्रदूषित कर दिया है, या पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।

भारत में फ्लुरोसिस के मामले में वैज्ञानिकों के मत मिलते हैं: वे मानते हैं कि भूजल के निष्कर्षण से ही पानी में फ्लुराईड फैल गया है। समाधान जटिल है, क्योंकि पानी दुर्लभ होती जा रही है और सफाई के सारे तकनीक आसानी से व्यवहार नहीं किए जा सकते। मगर संखिया की समस्या उतनी जटिल नहीं है। गंगा के मैदान में भारी वर्षा होती है, और सतही जल को फिर से पीने के लिए व्यवहार किया जा सकता है। छिछले कुओं और साफ तालाबों में फिर से पानी भरा जा सकता है, जिससे कि संखिया -लैस पानी लोगों की मौत का कारण न बने।

मगर अंत में, समस्या पानी की नहीं है। समस्या है भूजल के उपयोग का। समस्या है संखिया से प्रदूषित कुओं और हैंडपंपों को खोज निकालने का, और लोगों को उनके पीने के पानी की गुणवत्ता के बारे में बताने का। अनुश्रवण का उद्देश्य होना चाहिए इस समस्या का जवाब खोजना। नकारने का जो खेल बलिया में चल रहा है, उसका अंत होना चाहिए। तभी हमारी विभंजित दफ्तरशाही अपना काम करेगी। जब तक यह नहीं होगा, अमृत जैसा पानी हमारे लिए विष बनता रहेगा। और उसे पीने के लिए हमारे सिवा कोई भी नहीं होगा।

समस्या का समाधान बीमारियों का प्रबंधन नहीं, बल्कि पानी का प्रबंधन है। हम पीने के पानी लिए भूजल पर पूरी तरह से निर्भर हो चुके हैं। इस संपदा के सटीक प्रबंधन के लिए हमारे पास कोई नियम-कानून नहीं है। भूजल के अति-उपयोग पर कोई रोक नहीं है। इसके साथ ही, अपनी अत्याधुनिक तकनीकों की सहायता से, हम पानी के लिए भूगर्भ तक आसानी से पहुंच रहे हैं।

हमें सख्त जरूरत है ऐसी परियोजना की जो यह निश्चित करे कि पानी के निष्कर्षण और भूजल संपदाओं के री-चार्ज में एक सन्तुलन बना रहे। हमें ऐसी परियोजनाओं में निवेश करना चाहिए जो वर्षा की पानी से भूजल संपदाओं के पुनर्गठन के लिए काम करें।

लेकिन यही एक मात्र समाधान नहीं है। हमें सतही जल व्यवस्थाओं को भी सक्षम बनाना होगा। इसके के लिए जनसाधारण के स्वास्थ्य के हितैषियों को जल प्रबंधन समुदायों के साथ मिलकर काम करना होगा। सरकार हमें पानी नहीं दे सकती — हम यह जानते हैं। हमें अब सामुदायिक जल प्रबंधन व्यवस्थाओं का — हमारे तालाब, कुंए आदि — फिर से गठन करना होगा। उन्हें साफ और प्रदूषण से बचाकर रखना होगा। यह काम तभी संपन्न हो सकता है जब स्थानीय लोग इसमें सक्रिय हों। अगर ऐसा नहीं होगा, तो पानी हमारे लिए एक सपना बनकर रह जाएगा। एक टूटा हुआ सपना।

याद रखें, हमारे आलस्य और निष्क्रियता के फलस्वरूप हमारा यह देश अपंग हो जाएगा। हमारी धरती रसातल बनकर रह जाएगी। ■

**सुनीता नारायण**
*डायरेक्टर*
सीएसई, नई दिल्ली